Saathi

Date __/__/__

मानव भूगोल की परिभाषा - जीन ब्रुन्श - ने मानव भूगोल को परिभाषित करते हुए लिखा है मानव भूगोल उन सभी तथ्यों का अध्ययन है। जो मानव के क्रिया कलापों से प्रभावित है। और जो हमारे ग्रह के धरातल पर घटित होने वाली घटनाओं मे से छाटकर एक विशेष श्रेणी मे रखे जा सकते है।

मानव भूगोल की सिद्धान्त

1. क्रियाशीलता अथवा परिवर्तन शीलता का सिद्धान्त

इस सिद्धान्त के अनुसार सभी वस्तुएँ जड़ और चेतन भौतिक एवं सास्कृतिक परिवर्तित होती रहती है। हर वस्तु मे प्रतिक्षण कोई न कोई परिवर्तन होता रहता है, उन्होने परिवर्तनशीलता को स्वीकार करते हुए लिखा है। हमारे चतुर्दिक जितनी वस्तुएँ है। वे सब परिवर्तनशील है। प्रत्येक वस्तु या तो परिवर्तित हो रही या उसका विनाश हो रहा है।

(क) भौतिक शक्तियाँ (ख) जैविक शक्तियाँ

2. पार्थिव एकता अथवा सर्वभौमिकता का सिद्धान्त

इस सिद्धान्त का अर्थ है, कि विश्व के सभी पदार्थ या तत्व चाहे वे जड़ हो या चेतन एक-दूसरे से सम्बन्धित है। ब्रुन्श का विचार है कि भूगोल के सिद्धान्त विभिन्न तत्वो का अध्ययन पृथक नही किया जाना चाहिए क्योंकि वे पारस्परिक सम्बन्धो से जुड़े है क्योंकि किसी तरह के व्यक्तिगत अध्ययन से मानव भूगोल का पशु जगत मे भी आपसी अन्तर्सम्बन्ध पाया जाता है मिट्टी वनस्पति एवं जलवायु मे अन्तर्सम्बन्ध पाया जाता है।

मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया

Date ___ /___ /_____

ब्रुन्श का विचार है। है कि विभिन्न शक्तियाँ एक दुसरे को निश्चित दिशाओं मे ही प्रभावित नही करती और न कुछ विशेष दशाओ मे एक दुसरे के प्रति प्राकृतिक रूप से क्रिया प्रतिक्रिया होती है वास्तव मे प्रत्येक शक्ति अन्य शक्तियो से उनके द्वारा उत्पन्न दशाओ को अगणित के कारण घनिष्ठ रूप मे बँधी है। उनके अनुसार " परिवर्तन एवं अन्तर्सम्बन्ध दो ऐसे सिद्धान्त है।

सम्भववाद की विचारधारा —

ब्रुन्श के अनुसार मानव मे बौद्धिक क्षमता होती है। वह एक क्रियाशील प्राणी है जो वातावरण को परवर्तित करने की अपुर्व क्षमता रखता है। मानव अपने चतुर्दिक व्याप्त वातावरण मे परिवर्तन कर सकता है। ब्रुन्श प्राकृति के भौतिक तथ्यो के साथ साथ मानव के बुद्धिमान समायोजन के भी पक्षधर रहे है।

सम्पुर्ण विश्व या ब्रह्माण्ड एवं उसकी वस्तुएं या तथ्य सभी कुछ प्रतिक्षण बदल रहे है आज जो है। कल वही पुराना हो जाएगा भूतकाल वर्तमान एवं भविष्य के सम्बन्ध विशिष्ठ एवं परिवर्तनशील होते हुए

इस प्रकार ब्रुन्श महान भूगोलवेत्ता शिक्षाशास्त्री कुशल सामाजिक कार्यकर्ता एव दर्शनशास्त्री हुए उन्होने अपनी रचना एवं प्रभाव से फ्रांस मे भूगोल के विकास के लिए अथक प्रयास किए उनकी देन आज भी प्रेरणादायक है। ब्रुन्श ने भूगोल के क्षेत्र मे ऐसा कार्य किया जिस पर बाद भूगोलवेत्ता गर्व करते है।

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा,

Date __/__/__

आधुनिक भूगोल के विकास मे सावर के के योगदान का मुल्यॉकन किजिए

कार्ल आस्कर सॉवर (1889-1975 A.D.)

अमेरिका की भौगोलिक विचार धारा मे एक नया मोड़ (1925ई०) मे आया जब कार्ल मार्क्स ने अपनी पुस्तक "भू दृश्य की आकारिकी" द्वारा भूगोल क्षेत्र विश्लेषण पर बल दिया जिस प्रकार जर्मनी मे हेटनर ने इस बात पर आपत्ति की विभिन्न तत्वों के मध्य सम्बन्धों का अध्ययन किसी एक विषय का अध्ययन क्षेत्र नही हो सकता उसी प्रकार अमेरिका मे सॉवर ने डेविस सेम्पुल हटिंगटन द्वारा भूगोल को अजैव व जैव तत्वो के माध्यम सम्बन्ध के अध्ययन तक सीमित रखने पर असन्तोष प्रकट किया इनके (1930ई०) के बाद अमेरिकी भूगोलवेत्ताओं के चिन्तन के विकास के समझने के लिए कार्ल सावर के मत से परिचित होना आवश्यक है।

भौगोलिक संकल्पनाऐं — भूगोल के वैकल्पिक अध्ययन वस्तु की खोज की श्रृंखला मे ही कार्ल सॅावर ने भूदृश्य को भौगोलिक अध्ययन का विकास वस्तु बताया। हेटनर की भॉति सॉवर ने भी इस बात पर बल दिया। इसमे शोध का परिणाम पहले से ही ज्ञात रहता है। नियंत्रण अथवा प्रभाव दूसरा एक अन्धविश्वास को स्वीकार करे जैसा है हेटनर के क्षेत्र विश्लेषण की संकल्पना को स्वीकार करते हुए इन्होंने भूगोल की पृथ्वी तल की किसी क्षेत्र मे परस्पर सम्बंधित तत्वो तथा उसमे एक स्थान से दूसरे स्थान पर मिलने वाले प्राकृतिक तथा जैविक तत्वो का उपयोग करता है।

पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया

Saathi

Date ___/___/___

उदाहरणार्थ — गंगा के मैदान के आर्यो ने वहाँ उपलब्ध प्राकृतिक तत्वो विस्तृत समतल धरातल उपजाऊ जलोढ मिट्टी एवं प्रचुर जल का उपयोग करते हुए अपनी पशुचारण एवं कृषि पर अधारित संस्कृति के अनुरूप इसे सास्कृतिक भूदृश्य मे परिणत कर दिया संस्कृत दृश्य मे अब विविध फसलो से भरपुर खेत गाँव नगर एवं इनको जोड़ने वाले कच्चे पक्के मार्गों की प्रमुखता है।
परन्तु प्राकृतिक भूदृश्य मे सास्कृतिक भूदृश्य उभरता है। वीरान समुद्रतट पर पतन दिखाई देने लगते है। पर्वतो के ऊपर मनुष्य के कार्यों की छाप खेत आधिवास तथा पगडंडियाँ उभर आती है।

सॉवर के शब्दो मे —

हमारे वास्तविक जगत के किसी भी खण्ड या भूदृश्य मे अनेक परिवर्तन हो रहे है। अपने परिवर्तनशील बसाव स्थल से मनुष्य का सम्पर्क जो सास्कृतिक भूदृश्य के रूप मे प्रकट होता है हमारा उद्देश्य मनुष्य के लिए स्थल विशेष का महत्व तथा उसके द्वारा स्थल के इस अन्तर्सम्बन्ध का अध्ययन करते है।

सॉवर के अनुसार सांस्कृतिक भूदृश्य के निम्न स्वरूप है

(1) अधिवास (2) उत्पादन (3) परिवहन एवं संचार तथा (4) जनसंख्या (घनत्व एवं गमनागमन)

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया

Saathi

Date __/__/____

सॉवर के मतानुसार – पृथ्वी का मानवोचित उपयोग किया जा सकता है। मानव जीवन के भौतिक आधार की सरल संस्कृतियाँ आज की प्रोद्योगिकी से युक्त मानव भूतकाल के अनुभवो का लाभ उठाते हुए भूमि की क्षमता तथा जीवन की आवश्यकता के मध्य संतुलन स्थापित करने की सीख ले सकता है। ताकि उसके जीवन के आधार स्थायी बन सके

(1) कार्ल सॉवर हैटनर एवं अन्य भूगोलवेत्ताओं के इस मत से सहमत थे कि किन्ही दो तत्वों अथवा तत्व समूहो के बीच कारण कार्य या किसी किसी अन्य प्रकार के अन्तर्सम्बन्ध स्थापित करना मात्र भूगोल अध्ययन क्षेत्र नही हो सकता है।

(3) भूगोल भूतल पर किसी क्षेत्र मे परस्पर सम्बन्धित तत्वो का अध्ययन करता है।

(4) भूगोल प्राकृतिक वातावरण के उन तत्वपुंजो का अध्ययन करता है जो मानव के उपयोग की दृष्टि से है

(5) सॉवर ने भूगोल के प्रदेशो या क्षेत्रो के स्वरुप का अध्ययन करने के बजाय भूदृश्य का अध्ययन मानना बेहतर समझा क्योकि (1925 ई०) तक प्रदेश की संकल्पना स्पष्ट नही थी

(6) भूगोल हेतु किसी क्षेत्र के दृश्य मानवकृत जैसे – अधिवास उत्पादन परिवहन तथा जनसंख्या घनत्व अधिक महत्व पूर्ण है।

(7) सॉवर मनुष्य की जीवन पद्धति तथा प्रकृति के अजैव तत्व एवं पशु तथा पौधो के साथ घनिष्ठ परस्पर सामञ्जस्यपुर्ण सहजीवन स्थापित करने के पक्ष मे थे

29/09/202

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
बलिया